Journal
of the
Oriental Institute
M.S. University of Baroda
ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

हिन्दी समीक्षा : सौन्दर्य विषयक अवधारणा

डॉ. राधा भारद्वाज, सहायक प्राध्यापक, हिंदी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फतेहाबाद, आगरा

शोध सार :

प्राकृतिक देवोपासक आर्य मनीषियों ने अपने मंत्र दर्शन में चिर सुन्दर सत्य की खोज करके भारतीय सौन्दर्य दृष्टि का उद्‌घाटन किया है। भारतीय सिंतन में पश्चिमी सौन्दर्यशास्त्र की भाँति किसी पृथक शास्त्र की परिकल्पना नहीं की गई है, किन्तु नाटक, संगीत, चित्रादि ललित कलाओं के अंतर्गत व्यष्टि से समष्टि की प्रक्रिया में लावण्य, रम्य, रमणीय, सुन्दर आदि शब्द प्रयोगों से सौन्दर्य तत्व की व्यापकता को स्वीकार किया है। कलाकार के अभ्यान्तर संस्कार की सुगन्ध के रूप में रमणीयार्थ प्रतिपादक शब्द, उक्ति की वक्रता, अलंकार सौष्ठव से विषयीगत सौन्दर्य और इससे भी ऊपर अप्रतिम सौन्दर्य का अनुभव भारतीय कवियों, आचार्यों ने किया है।

बीज शब्द : सौंदर्य**,** आह्लाद, लालित्य, एस्थेटिक्स्।

परिचय :

भारतीय चिंतन-दृष्टि सुन्दर के सत्य, शिव समन्वित रूप को अभिव्यक्ति करने के प्रति उन्मुख रही है, क्योंकि परमशक्तिमय सौन्दर्य मुक्त परमात्मा सब में निहित है और वही आनन्द की सृष्टि करता है। आनन्द भी अंततः सुन्दर का ही प्रकाश है। सौन्दर्य शास्त्र में सौन्दर्य एवं आनन्द को पर्याय माना गया है। बाह्य आवरण को छिन्न करके आभ्यतंर शाश्वत सौन्दर्य की खोज भारतीय सौन्दर्य चिंतन का मूलाधार कहा जा सकता है। वैदिक भारतीय ने अपने चतुर्दिक सौन्दर्य को जिस प्रकार देखा, जिस ज्योति ने उसकी आँखों को आकर्षित किया, जिस दृश्य से उसका हृदय पुलकित हो उठा उस सबको उसने परम सुन्दर की सुन्दर सत्ता के रूप में स्वीकार करके अपनी कल्पना और अपने हार्दिक आनन्द से मण्डित कर दिया। जो 'एस्थेटिक्स' अर्थात् सौन्दर्य शास्त्र शब्द पाश्चात्य चिन्तन परम्परा से आया है। एशियाई दर्शन के अधिकांश इतिहासों में सौन्दर्य शास्त्र, कला सौन्दर्य तथा इनसे सम्बन्धित शब्दों का उल्लेख तक नहीं मिलता। हिन्दी साहित्य में सौन्दर्य शास्त्र शब्द अत्यधिक प्राचीन नहीं है, किन्तु इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं, कि भरतीय कला चिंतन में सौन्दर्य बोध नहीं था। सम्पूर्ण संस्कृति वाड्मय जहाँ सौन्दर्य के विविध रूपात्मक वर्णनों से अपूर्ण है, वहीं शास्त्र चर्चा में भी सौन्दर्य तत्व अंग्रेजी का रहा है। सम्भवतः इसीलिए सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी प्राच्य विद्या विशारद लुई रेनू ने कहा है- "भारत की प्रतिमा से ज्ञान की जितनी भी शाखाएं उत्पन्न हुई हैं, उनमें सौन्दर्य शास्त्र जितने गहरे रूप में भारतीय है, उतना और कोई नहीं।"

विचार विमर्श :

पाश्चात्य सौन्दर्य शास्त्र भारतीय रस सिद्धान्त के अन्तर्गत स्वतः समाहित है। पश्चिमी आचार्यों ने कला के अन्तर्गत 'ब्यूटी शब्द के प्रयोग द्वारा सौन्दर्यशास्त्र विषयक शब्द की विशद आलोचना पर्यालोचना की है। हिन्दी समीक्षा शास्त्र में पश्चिमी सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका का आधार लेकर एस्थेटिक्स के लिए सौन्दर्य शास्त्र

शब्द का प्रयोग हिन्दी समीक्षा की ही देन कहा जायेगा। सौन्दर्यशास्त्रीय चिंतन के क्रम में आचार्य शुक्ल ने ही "क्रोचे के अभिव्यंजनावाद" के समीक्षा संदर्भ में सौन्दर्यशास्त्र सम्बन्धी चिंतन परंपरा का सूत्रपात किया है। सौन्दर्य के स्वरूप, उसकी वस्तुगत और व्यक्तिगत सत्ता बिम्ब और प्रतीक, अनुभूति एवं कल्पना, काव्य भाषा आदि के बारे में शुक्ल जी का चिंतन यत्र-तत्र बिखरे रूप में मिलता है। आचार्य शुक्ल के मत में "सौन्दर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं है, मन के भीतर की वस्तु है। यूरोपीय कला समीक्षा की यह एक बड़ी ऊँची या दूर की कड़ी समझी गई है। वास्तव में यह भाषा के गढ़बढ़ाने के सिवा और कुछ नहीं, जैसे वीर कर्म से पृथक वीरत्व कोई पदार्थ नहीं, वैसे ही सुन्दर वस्तु से पृथक सौन्दर्य कोई पदार्थ नहीं। कुछ रूप रंग की वस्तुएँ ऐसी होती है जो हमारे मन में आते ही थोड़ी देर के लिए हमारी सत्ता पर ऐसा अधिकार कर लेती है कि उसका ज्ञान हवा हो जाता है और हम उन वस्तुओं की भावना के रूप में परिणित हो जाते हैं। हमारी अन्तः सत्ता की यही तदाकार परिणिति सौन्दर्य की अनुभूति है जिस वस्तु का प्रत्यक्ष ज्ञान या भावना से तदाकार परिणति जितनी ही अधिक होगी, उतनी ही यह वस्तु हमारे लिए सुन्दर कही जायेगी।"

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने सृष्टिगत सौन्दर्य और कलागत सौन्दर्य में अन्तर प्रतिपादित करते हुए सौन्दर्य की निष्काम अभिव्यक्ति को महता दी है। उनकी अवधारणा है- "प्रयोजन के अतीत पदार्थ का नाम सौन्दर्य है. प्रेम है, भक्ति है, मनुष्यता है। कालीदास की लालित्य योजना के अन्तर्गत उन्होंने अपनी सौन्दर्य बोध सम्बन्धी शास्त्रीय मान्यताएं व्यक्त की है। मानव तत्त्व, लोक तत्त्व, मिथक एवं लालित्य इन चार तत्वों की भूमिका में उन्होंने सौन्दर्य तत्व की व्याख्या की है।" आचार्य द्विवेदी ने समग्र सौन्दर्य तत्त्व के अन्वेषण की व्याख्या की है। उनके अनुसार "सौन्दर्य की स्थिति दृष्टा के रागात्मक चित्त में है, अथवा सुन्दर वस्तु में? क्या सौन्दर्य का विश्वजनित मानदण्ड है अथवा उसका कोई मानदण्ड हो ही नहीं सकता। रूप और सौभाग्य का क्या सम्बन्ध अलंकरण क्या सौन्दर्य के हेतु भूत है या सहायक है? मनुष्य की शोभा में और प्रकृति की शोभा में क्या और कैसा सम्बन्ध है? प्रकृति के जिस सौन्दर्य का प्रसार किया है। उससे मनुष्य के प्रयत्न सम्बन्धित लालित्य योजना का क्या सम्बन्ध है? ऐतिहासिक चेतना एवं भौगोलिक ज्ञान का सौन्दर्य व्यापन कैसा उपयोगी होता है, छंद क्या है और नृत्य, गीत, चित्र, मूर्ति, सदाचार आदि से उसका क्या सम्बन्ध है? द्विवेदी जी ने अपनी सौन्दर्य बोध सम्बन्धी शास्त्रीय मीमांसा में आदर्शोन्मुख मानवतावादी दृष्टि का परिचय दिया है। लालित्य सिद्धान्त के सर्वांगीण सूत्र खोजे हैं. अस्तु, उनकी सौन्दर्यविषयक दृष्टि को मिथ्य का आध्यात्मवादी लालित्य सिद्धान्त कहा जा सकता है।"

सौन्दर्य दर्शन को शास्त्रीय विवेचना की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत कर डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा ने सौन्दर्य शास्त्र और सौन्दर्य विज्ञान में अंतर प्रस्तुत किया है तथा सौन्दर्य शास्त्र के अध्ययन की उपयागिता पर प्रकाश डाला है। डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा की अवधारणा के अनुसार "सौन्दर्य शास्त्र एक विशेष दृष्टिकोण है जिसे शास्त्रीय कहा जा सकता है। वह मानवीय चेतना के उस अंश का विधिवत अध्ययन करता है। उसके विश्लेषण चिन्तन "सृजन" आस्वादन सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करता है जिस अंश को हम आनन्द, रस, आल्हाद की अनुभूति कहते हैं और जो वस्तु के सौन्दर्य से उत्पन्न होता है, हमारी अनुभूति, वस्तु की अनुभूति से उत्पन्न

आनन्द का नाम है। अपनी अनुभूति प्रत्यक्ष, स्मृति कल्पना आदि के द्वारा आनन्द को उत्पन्न करने वाले वस्तु के गुण को "सौन्दर्य एवं उस वस्तु को सुन्दर कहते हैं।"

डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा ने सौन्दर्य के वस्तुनिष्ठ एवं व्यक्तिनिष्ठ रूप की एकांगिता स्वीकार करते हुए उसे पार्थिव एवं आध्यात्मिक रूप में परिभाषित किया है। उन्होंने सौन्दर्य के रूप योग और अभिव्यक्तिपरक तत्वों का विश्लेषण करते हुए कहा है कि "सौन्दर्यानुभूति में पार्थिव रूप और आध्यात्मिक रूप का इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि एक यदि चेतन आत्मा है तो दूसरा उसका रूपवान व्यक्त शरीर। एक यदि स्रोत है तो दूसरा उसका वेग, एक यदि अग्नि है तो दूसरा उसकी दहकता। सुन्दर वस्तु मूर्तिमती अनुभूति है और अनुभूति स्वयं वस्तु के सौन्दर्य से स्वरूप पाती है। डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा का निष्कर्ष है कि "सौन्दर्य के सम्पूर्ण अनुभव में सुन्दर वस्तु का पार्थिव रूप और इसका आनन्दमय आध्यत्मिक रूप इतने संश्लिष्ट रहते हैं कि इनके वियुक्त करने से ये दोनों ही विलीन हो जाते हैं।

डॉ० फतेह सिंह ने भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका में भौतिकवाद एवं आध्यात्मवादी वर्गों में सौन्दर्य शास्त्रीयों को बांट कर सौन्दर्य दृष्टि की व्याख्या की है। डॉ० फतेह सिंह के विचार में "काव्य जिन मानस प्रत्ययों अथवा चित्रों के माध्यम से सहृदय पाठक को सौन्दर्यानुभूति प्रदान करता है, वे चक्षु श्रोत, जिह्वा, नासिका तथा त्वचा द्वारा प्रदत्त रूप, शब्द, रस, गंध एवं स्पर्श के मानस प्रत्यय अथवा चित्र ही तो होते हैं। अस्तु काव्य का सौन्दर्य मानस ग्राह्य है। साधारणतया वस्तु से मानव के मन में कोई सुखद अनुभूति होती है, उसको वह सुंदर कहता है-इसी सुखद अनुभूति को सौन्दर्यानुभूति कहा जाता है और इन्द्रियों इस अनुभूति का माध्यम हैं।"

सौन्दर्यशास्त्र विषयक भारतीय समीक्षा पद्धति में डॉ० कुमार विमल का चिन्तन महत्वपूर्ण है। उन्होंने सौन्दर्य शास्त्र को ललित कलाओं से सम्बद्ध करके सौन्दर्य शास्त्र और कला शास्त्र को समानार्थी माना है। उनकी अवधारणा है- 'सौन्दर्य शास्त्र का सम्बन्ध ललित कलाओं के माध्यम से अभिव्यक्त सौन्दर्य के साथ है, अन्य माध्यमों से अभिव्यक्त सौन्दर्य के साथ नहीं। सौन्दर्य शास्त्र को शास्त्र कहना अधिक उपयुक्त है, क्योंकि इसका सम्बन्ध सौन्दर्यानुभूति के सम्पूर्ण क्षेत्र से नहीं, केवल ललित कलाओं के माध्यम से अभिव्यक्त सौन्दर्य के साथ है। सौन्दर्य शास्त्र काव्य शास्त्र का ही विकसित और कला चैतन्य से समन्वित रूप है। सौन्दर्य शास्त्र सभी ललित कलाओं का शास्त्र है और इसकी सीमा काव्य के साथ काव्येत्तर कलाओं, मूर्ति, चित्र और संगीत तक फैली है। अतः सौन्दर्य शास्त्र मात्र काव्य शास्त्र नहीं, बल्कि कला शास्त्र है। हिन्दी समीक्षा में सौन्दर्य शास्त्र के अध्ययन के सम्बन्ध में कुमार विमल का मत है-"अब तक सौन्दर्य शास्त्रीय अध्ययन में सूक्ष्म तात्विक सिद्धान्त परिकल्पना के लिए जो आवेश रहा है, उसे नियंत्रित करना होगा और सौन्दर्य शास्त्रीय अध्ययन को व्यवहारिक आलोचना के निकट लाकर हमें सौन्दर्य शास्त्र का एक स्वतंत्र व्यक्तित्व गढ़ना होगा।"

भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की समीक्षा के क्रम में डॉ० नगेन्द्र ने भारतीय और पाश्चात्य सौन्दर्य शास्त्रीय मान्यताओं के अध्ययन के उपरान्त 'भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका नामक पुस्तक में महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं। सौन्दर्य शास्त्र की अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करते हुए उन्होंने इसकी तुलना काव्य शास्त्र, कला शास्त्र, मनोविज्ञान और तत्व की मीमांसा से की। सौन्दर्य शास्त्र के सम्बन्ध में उनकी स्थापना है कि

"सौन्दर्य शास्त्र ललित कलाओं के रूप में अभिव्यक्त सौन्दर्य से सम्बद्ध मौलिक प्रश्नों के तात्विक विवेचन और उसके परिणामी सिद्धान्तों की संहिता का नाम है।" उनकी अवधारणा यह है कि भारतीय सौन्दर्य का वास्तविक विकसित रूप काव्य शास्त्र में ही व्याप्त है, वही इसका मूलाधार कहा जा सकता है। भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की रूपरेखा का निर्माण काव्य शास्त्र को केन्द्र में रखकर ही किया जा सकता है।

सौन्दर्य शास्त्र के संदर्भ में "अद्यती सौन्दर्य जिज्ञासा" "मध्ययुगीन रस दर्शन और समकालीन सौन्दर्य बोध, सौन्दर्य मूल्य और मूल्यांकन का साक्षी है। सौन्दर्य प्राश्निक-नामक ग्रन्थों में माननीय डॉ० रमेश कुंतल मेघ ने सौन्दर्य की महाशास्त्रीय व्याख्या प्रस्तुत की है। एस्थेटिक्स को उन्होंने "सौन्दर्य बोध शास्त्र" शब्द से अभिहित किया है। सौन्दर्य बोध शास्त्र, कला तथा जीवन की सम्बन्धता कायम करता है। सौन्दर्य शास्त्र सम्बन्धी गम्भीर प्रश्नों को डॉ० मेघ ने अपनी पुस्तकों में उठाया है। सौन्दर्य बोध शास्त्र की परिभाषा करते हुए अपने ग्रंथ, जो हिन्दी में सौन्दर्य शास्त्र विषय का नवीनतम ग्रंथ है में लिखा है कि "कलाकार कला या सौन्दर्य वस्तु प्रेक्षक के त्रित्व से सम्बन्धित नाना भांति के सवालों और समस्याओं का सैद्धान्तिक निदान खोजना सौन्दर्य बोध शास्त्र का लक्ष्य है।" डॉ० मेघ जी ने अपने निष्कर्षों में कहा है कि किसी भी दशा में सौन्दर्य बोध शास्त्र कला तथा जीवन की संबधता कायम करना ही जीवन की कच्चे माल के रूप में तो अधिक सुन्दर है ही साथ ही कला परिष्कृत माल के रूप में भी अधिक सुन्दर है। इसमें संदेह नहीं कि डॉ० मेघ जी को संस्कृत काव्य शास्त्र और पाश्चात्य लेखन की परम्परा की व्यापक जानकारी है। यह बात और है कि उनकी विभिन्न धारणाओं को स्पष्ट करने के लिए की गई गणतीय विवेचना पद्धति को देखकर मेरे जैसा सामान्य पाठक आतंकित हो जाता है।

यहाँ भारत के प्रख्यात सौन्दर्य शास्त्री कांतिचन्द्र पाण्डेय की भी सौन्दर्य विषयक चिंतना की चर्चा करना अप्रासंगिक न होगा। सौन्दर्य शास्त्र के संदर्भ में उन्होंने एस्थेटिक्स के लिए स्वतंत्र कला शास्त्र शब्द का प्रयोग किया है। डॉ० नगेन्द्र की पुस्तक के पूर्व ही उनकी पुस्तक इंडियन 'एस्थेटिक्स' अंग्रेजी में छप चुकी थी। हिन्दी में स्वतंत्र कला शास्त्र भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों प्रकाशित हो चुकी है। उनका मत है कि कलाओं में विशेषतः काव्य संगीत और वस्तु में ऐसी कृतियों को उत्पन्न करने की शक्ति है जो कि परब्रह्म को इन्द्रिय ग्राह्य रूप में इस प्रकार से उपस्थित करती है कि वे आवश्यक मानसिक दशाओं से मुक्त सहृदय कला रसिकों के लिए ब्रह्मानन्द प्राप्ति का समुचित साधन बन जाती है। उनके मतानुसार यह स्वतंत्र कला शास्त्र सब कलाओं में उपलब्ध सौन्दर्य को अपना प्रतिपाद्य विषय नहीं बनाता, न प्रकृतिगत सौन्दर्य को। उनका विचार है कि भारतीय दृष्टिकोण से स्वतंत्र कला शास्त्र स्वतंत्र कलाओं का विज्ञान एवं दर्शन है। दार्शनिकता से बचकर सामान्य विवेक चिन्तन द्वारा सौन्दर्य तत्व अवधारणा में एस०टी० नरसिंहाचारी ने सौन्दर्य के साथ-साथ कुरूप तत्वों का भी विवेचन किया है। उन्होंने कहा "यदि सौन्दर्य की दार्शनिक भावना जटिल है तो उसे साहित्य के संदर्भ में सरल व्यवहारिक रूप देना चाहिए, जिससे कलात्मक अभिव्यंजना की मूल चेतना स्पष्ट हो।

यहाँ उन पुस्तकों की भी चर्चा करना आवश्यक जो अन्य भाषाओं से अनुदित होकर हिन्दी में आई है। यद्यपि इनमें हिन्दी विचारकों के सौन्दर्य शास्त्रीय चिन्तन का ज्ञान नहीं हो सकता, लेकिन हिन्दी की समृद्धि

इसमें अवश्य हुई है। इनमें मूल बंगला से अनुदित सुरेन्द्रनाथ दास गुप्ता की पुस्तक 'सौन्दर्य तत्व उल्लेखनीय है। इसका अनुवाद आनन्द प्रकाश दीक्षित ने किया है। इस पुस्तक में पाश्चात्य विचारकों के सौन्दर्य चिंतन की रूपरेखा के बाद भारतीय विचारकों की मान्यताओं को बहुत स्पष्टता से प्रस्तुत किया गया है।

इसी संदर्भ में जर्मन दार्शनिक इमैनुअल काण्ट के सौन्दर्य शास्त्री प्रबन्ध का हिन्दी रूपान्तर 'सौन्दर्य मीमांसा शीर्षक में प्रकाशित हुआ है। इसके रूपान्तरकार-राम केवल सिंह हैं। इसी प्रकार 1972 में आर०जी० कलिंगवुड की प्रसिद्ध पुस्तक 'प्रिंसिपल्स ऑफ आर्ट' का अनुवाद 'कला के सिद्धान्त' शीर्षक में प्रस्तुत हुआ। इसके अनुवादक बृजभूषण पालीवाल हैं। हिन्दी समीक्षा के क्षेत्र में सौन्दर्य शास्त्रीय चिंतन का यह सर्वेक्षण सर्वांगीण या पर्याप्त नहीं है, क्योंकि न तो इसमें मैंने पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों को लिया है और न अन्य भाषाओं से अनुदित विभिन्न ग्रन्थों को। अतः अभी इसमें और भी अनुसंधान करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष :

उपसंहारात्मक निष्कर्षों की सिद्धि में कहा जा सकता है कि भारतीय एवं हिन्दी समीक्षकों के द्वारा सौन्दर्य विषयक अवधारणा की व्याख्या के अनेक पक्ष प्रस्तुत किये गये हैं। पारम्परिक सौन्दर्य तत्व विषयक दृष्टि से लेकर लालित्य तत्व, स्वतंत्र कला शास्त्र, सौन्दर्य बोध शास्त्र आदि विश्लेषणमयी रूपरेखा द्वारा सौन्दर्य विषयक व्यापक चिंतन के सूत्र प्रस्तुत हुए है। जो मानव की उदात्त वृत्तियों की ऊर्ध्वमुखी संयोजना तथा अखंडानन्दमयी अनुभूति को प्रकाशित करने में समर्थ रहे हैं। भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की परम्परा निश्चय ही समृद्ध परम्परा कही जा है।

संदर्भ :

1. डॉ० हरद्वारी लाल शर्मा- सौन्दर्यशास्त्र, पृ०-10
2. डॉ. नगेंद्र-भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका, पृ०-4
3. क्रोंचे-ऐस्थेटिक्स, पृ०-155
4. डॉ० लक्ष्मण प्रसाद शर्मा-सौन्दर्यशास्त्र स्वरूप एवं समस्याएँ, पृ०-6
5. वही, पृ०-13
6. डॉ० हरद्वारी लाल शर्मा-सौन्दर्यशास्त्र, पृ०-121
7. वही पृ०-114
8. डॉ० फतेह सिंह-भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका, पृ०-101
9. डॉ० नगेन्द्र-भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका, पृ०-11
10. डॉ० कुमार विमल-सौन्दर्यशास्त्र के तत्व, पृ० 13
11. वही, पृ०23
12. डॉ० नगेन्द्र-भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका, पृ०-28
13. वही-पृष्ठ-118
14. डॉ० रमेश कुन्तल मेघ, अथातो सौन्दर्य जिज्ञासा, पृष्ठ-47